भारत सरकार
कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 1223
उत्तर देने की तारीख 11 दिसंबर, 2023
सोमवार, 20 अग्रहायण, 1945 (शक)

नामदा शिल्प

1223. श्री संजय काका पाटील:

क्या कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) कौशल भारत प्रायोगिक परियोजना का ब्योरा क्या है जिसने नामदा शिल्प को सफलतापूर्वक पुनर्जीवित किया है;

(ख) दीर्घावधि में इस शिल्प के सतत विकास और इसका और विकास को सुनिश्चित करने के लिए क्या तंत्र या अवसर मौजूद है;

(ग) इन कारीगरों को दी जाने वाली वित्तीय सहायता का ब्योरा क्या है; और

(घ) उक्त पहल का नामदा शिल्प में शामिल व्यक्तियों की आजीविका और कौशल विकास पर क्या प्रभाव पड़ा है?

उत्तर

कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्य मंत्री
(श्री राजीव चंद्रशेखर)

(क) कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय (एमएसडीई) भारत सरकार के कुशल भारत मिशन (सिम) के अंतर्गत, विभिन्न स्कीमों अर्थात प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई), जन शिक्षण संस्थान (जेएसएस), राष्ट्रीय शिक्षुता संवर्धन स्कीम (एनएपीएस) और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) के माध्यम से शिल्पकार प्रशिक्षण स्कीम (सीटीएस) के अंतर्गत कौशल विकास केंद्रों/कॉलेजों/संस्थानों आदि के व्यापक नेटवर्क के माध्यम से देश भर में समाज के सभी वर्गों को कौशल, पुनर्कौशल और कौशलोन्नयन प्रशिक्षण प्रदान करता है। सिम का उद्देश्य भारत के युवाओं को भविष्य और उद्योग के लिए तैयार कौशल प्राप्त करने में सक्षम बनाना है। नामदा, कश्मीर का एक हस्तनिर्मित ऊनी गलीचा, बिना काते ऊन या ऊन-कपास मिश्रण का उपयोग करके अपनी अनूठी फेल्टिंग प्रक्रिया के कारण फर्श को कवर करने के रूप में उत्कृष्ट है। पानी के साथ ऊनी चादरों की परत बनाकर और उन्हें दबाकर तैयार किया गया, पर्यावरण-अनुकूल नामदा सब्जी-रंग वाले धागों का उपयोग करके उत्कृष्ट कश्मीरी आरी कढ़ाई का प्रदर्शन करता है।

कश्मीर के इस पारंपरिक और विरासत शिल्प को प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) के भाग के रूप में कुशल भारत की प्रायोगिक परियोजना के अंतर्गत सफलतापूर्वक पुनर्जीवित किया जा रहा है। इस पहल के तहत, लगभग 2,200 उम्मीदवारों को नामदा शिल्प की कला में प्रशिक्षित किया गया है, जो इस पारंपरिक शिल्प को संरक्षित करने और स्थानीय बुनकरों और कारीगरों को सशक्त बनाने में एक महत्वपूर्ण मील के पत्थर की द्योतक है। इस परियोजना ने कश्मीर के छह जिलों, अनंतनाग, बांदीपोरा, बारामूला, बडगाम, गांदरबल और श्रीनगर में व्यक्तियों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया है। यह परियोजना कौशल विकास के क्षेत्र में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल का एक

बड़ा उदाहरण प्रस्तुत करती है, क्योंकि इसे हस्तशिल्प सेक्टर कौशल परिषद और स्थानीय उद्योग भागीदारों के सहयोग से कार्यान्वित किया जा रहा है।

(ख) नामदा परियोजना नामदा शिल्प उत्पादन में शामिल लाभार्थियों के साथ एक उद्योग-आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम है जो कश्मीर में नामदा शिल्प से जुड़ी समृद्ध विरासत को संरक्षित और पुनर्जीवित करने में योगदान देगा। उद्योग आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम होने के नाते यह कश्मीर में नामदा शिल्प समूह के मौजूदा कारीगरों की पहुंच और रोजगार की उनकी संभावनाओं में भी सुधार करेगा। उदाहरण के लिए कुशल कारीगरों को इंडिया एक्सपोज़िशन मार्ट लिमिटेड, ग्रेटर नोएडा में भारतीय हस्तशिल्प और उपहार मेला (आईएचजीएफ) और दिल्ली मेले में विदेशी खरीदारों के बीच अपने उत्पादों को बढ़ावा देने का अवसर मिला। साथ ही, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी (एनआईएफटी) द्वारा नवीन डिजाइन और तकनीकों के माध्यम से और डिजिटल साक्षरता में प्रशिक्षण, यानी बुनियादी कंप्यूटर कौशल, संचार और विपणन पर सत्र के माध्यम से सहायता प्रदान की गई; कारीगर अपने उत्पादों में मूल्य जोड़ने की क्षमता विकसित कर सकते हैं।

(ग) नामदा शिल्प के कारीगरों और बुनकरों ने पीएमकेवीवाई के तहत प्रति उम्मीदवार 500 रुपए के प्रत्यक्ष लाभांतरण (डीबीटी) का लाभ उठाया। डीबीटी के अलावा, उद्योग के सदस्यों ने इस विशेष परियोजना के कार्यकाल के दौरान प्रति उम्मीदवार लगभग 1,500-2,000 रुपए का वित्तीय लाभ भी प्रदान किया है।

(घ) इस परियोजना के माध्यम से कुशल और उन्नत कारीगरों की आजीविका के अवसर नामदा उत्पादों की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मांग के कारण बढ़ गए हैं। उन्हें उद्योग जगत के सदस्यों से जोड़ा गया है। उत्पादों को कारीगरों द्वारा उत्पादित किया जाता हैं और निर्यात के लिए उद्योग के सदस्यों को आपूर्ति की जाती है, जिससे इन उत्पादों के लिए एक सतत और टिकाऊ आपूर्ति श्रृंखला स्थापित होती है।

*****